एशियाई देशों में प्रसारित रामकथा की विविधताएँ

(राम की भक्ति, वैभव एवं काव्यगत वैविध्य के संदर्भ में)

दीपेन्द्र कुमार
पीएच.डी. शोधार्थी,
मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय,
मणिपुर (इंफाल)

सारांश- विश्व साहित्य के जगत में प्रसिद्ध श्रीरामचरितमानस एक महान हिंदू महाकाव्य है। यह भगवान विष्णु के राम अवतार की कहानी है। सदियों से हिंदू धर्म के भीतर यह एक प्रभावशाली पवित्र ग्रंथ रहा है, जिसमें राम धर्म के प्रति भक्ति या सदाचार के एक उदाहरण के रूप में हैं। वहीं भारत के बाहर रामकथाओं में कहानी भारत की कथाओं से विभिन्नताएँ प्राप्त होती हैं। विश्वभर में प्रचलित रामकथा की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं और एक बेहतर इंसान बनने के लिए सदैव प्रेरित करती हैं। जिसकी रचना में प्रवासियों व विदेशी साहित्यकारों का राममय होना है। हालांति दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में प्रसारित रामकथाएं तुलसी जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस महाकाव्य की कथा से भिन्न हैं और वहां प्रसारित संस्करण भी अलग हैं। कुछ देशों में रचनाकारों ने अपनी मनोभाषा पर केंद्रित नई रामकथाएँ लिखी हैं तो कुछ लेखकों ने अपनी मनोभाषिकता के आधार पर पात्रों और जगहों के नाम तक बदले हैं। इतना ही नहीं कहीं कहीं पर लेखकों ने तो पूरी की पूरी रामकथा की कहानी ही बदलाव करके प्रस्तुत कर दिया है। इन कथाओं के विस्तार में कहीं न कहीं प्रवासी साहित्यकारों का योगदान भी रहा है।

बीज शब्द- श्रीरामकथा, वैश्विक, मनोभाषिक, प्रवासी, रचना, श्रीरामचरितमानस, असमानता, साक्ष्य, शिलालेख, भाषाएँ, कहानी, पात्रों, विभिन्नता, लोकप्रिय, प्रचलित।

आलेख - महाकाव्य श्रीरामचरितमानस की रामकथा का कथा साहित्य आज संसारभर में लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध है। विश्वभर में फैली रामकथा की वैश्विकता के आधार कहीं न कहीं साहित्यकारों अथवा प्रवासी नागरिकों का

योगदान सदैव से आधारभूत रहा है। दुनिया की सभी रामकथाओं में अपनी सरल भाषा एवं समर्पित भक्ति भावना से उत्प्रेरित श्रीरामचरितमानस आज संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय रामकथा है। तुलसी की श्रीरामचरितमानस अथवा राम का चरित्र प्रवासी साहित्यकारों एवं वैश्विक रचनाकारों के मनोभाषिक व बहुभाषिक परिश्रम के चलते सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होने के साथ विदेश की भाषाओं में भी देखी जा सकती है, जो विश्व साहित्य के जगत में शीर्ष स्थान प्राप्त कर चुकी है। महाकाव्य श्रीरामचरितमानस की रामकथा आज मूल रूप से सनातन धर्म और संस्कृति का हिस्सा है। महाकाव्य श्रीरामचरितमानस की रामकथा को भारत से बाहर अन्य देशों तक पहुंचाने का श्रेय बौद्ध धर्म और दक्षिण भारत के हिंदू शासकों से प्रारंभ होकर भारतीय गिरमिटिया मजदूरों वर्ग को जाता है। लेकिन वर्तमान के इस दौर में भारत के बाहर विदेशी भाषाओं में रामकथा को प्रचलित व स्थापित करने का गौरव, प्रवासी भारतीयों और प्रवासी साहित्यकारों को जाता है। प्रवासी साहित्यकार अपनी लेखनी व रचनाओं के माध्यम से राम की कथा को विश्वभर में चलायमान किया, जिसके कारण शनैःशनैः नई-नई भाष।ओं में रामकथा की वैश्विक वृद्धि होती रही है। वाल्मीकि रामायण की रामकथा को तुलसी की सरल भाषा में प्राप्त होना भी वैश्विक प्रसार में योगदान होने की कड़ी का एक अंग माना जाता है। वाल्मीकि रामायण की संस्कृत भाषा में लिखित रामकथा से ही श्रीरामचरितमानस का अवतरण अवधी हिंदी भाषा में हुआ है। बावजूद इसके तुलसी की श्रीरामचरितमानस न केवल वाल्मीकि रामायण से अपितु संसार में प्रचलित अन्य सभी रामकथाओं से सर्वाधिक लोकप्रिय व स्वीकार्य है। जिसके चलते रचनाकारों द्वारा श्रीरामचरितमानस को विभिन्न भाषाओं में अपने मानसिक दृष्टकोण व निजी विचारों को कथा में अभिव्यक्ति द्वारा प्रस्तुत कर समाज को समर्पित किया है। संसारभर में प्रलचित रचनाकारों की विभिन्न भाषाओं में व्याप्त रामकथाओं का प्रस्तुत आलेख में वर्णन प्रस्तुत किया गया है। रामकथा को विश्व में प्रसारित करने हेतु प्रवासी साहित्यकारों को श्रीरामचरितमानस का मिलना भी एक वरदान है।

प्रवासी साहित्यकारों के प्रयासों से आज लगभग 400 रामकथाएं विश्वभर में प्रचलित हैं और 3000 से अधिक ग्रंथों में राम के नाम का उल्लेख है। विश्वभर में प्रचलित रामायणों की संख्या सैकड़ों तक पहुंचती है। रामायण एक ऐसा महाकाव्य है जो सदियों से लोगों को प्रेरित करती रही है। यह एक आदर्श नायक की कहानी है, जो सत्य, न्याय और धर्म के लिए संघर्ष करता है। रामकथा पारंपरिक रूप से महर्षि वाल्मीकि के रूप में वर्णित महाकाव्य, कोसल राज्य में अयोध्या शहर के एक महान राजकुमार राम के जीवन का वर्णन करता है। इस महाकाव्य में राम की सौतेली माँ कैकेयी के अनुरोध पर राम के पिता राजा दशरथ द्वारा आग्रह किए गए जंगल में राम

चौदह साल के वनवास का अनुसरण करते हैं, अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ भारतीय उपमहाद्वीप के जंगलों में राम की यात्रा, लंका के राजा रावण द्वारा सीता का अपहरण, जिसके परिणामस्वरूप युद्ध हुआ और आनंद और उत्सव के बीच राम की अयोध्या वापसी और राम के राज्याभिषेक की कथा प्रचलित है।

विश्व में प्रचलित प्रमुख व लोकप्रिय रामकथाएँ -

श्रीरामचरितमानस एक ऐसा महाकाव्य है जिसने भारत समेत अन्य देशों में मनुष्यों को जीवन जीने की सीख दी है। भारतीय प्रायद्वीप सहित विश्व के अनेक देशों में आज साहित्यकारों की बदौलत मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की महिमा विभिन्न भाषाओं में व्याप्त है। प्रवासी साहित्यकारों के सहयोग से आज विश्वभर के अनेक देशों में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पटल में रामकाव्य मौजूद हैं तो वहीं हर देश की अपनी-अपनी रामायण परंपरागत हैं, जिनमें अलग-अलग संस्कृति, लोकजीवन, कहानी, किवदंतियों में रामकथा विविध स्वरूपों में मिलती है। इकसे अलावा महाकाव्य रामायण के विश्वभर में कई अन्य लोकप्रिय संस्करण भी प्रचलित है. जो कि वहां की स्थानीय भाषा में लिखी व प्रसारित की गई हैं। श्रीरामचरितमानस व रामायण और भगवान श्रीराम की कथा दुनियाभर में खासी प्रसिद्ध है, प्रवासी साहित्यकारों के काव्यात्मक कौशब के कारण विश्व के देशों में आज प्रभु राम को बड़ी श्रद्धा से याद किया जाता है। रामायण, रामलीला का मंचन और विभिन्न स्वरूपों में रामकथा पढ़ी, लिखी और गायी जाती है। वैश्विक पटल प्रचलित कुछ रामकथाएँ निम्नप्रकार से हैं-

'तिब्बती' रामायण -तिब्बती भाषा की रामायण के संदर्भ में माना जाता है कि तिब्बत के लोग प्राचीन काल से वाल्मीकि रामायण की मुख्यकथा से परिचित थे। यहाँ तिब्बती रामायण की छह प्रतियाँ तुन-हुआंग नामक स्थल से प्राप्त हुई हैं। उत्तर-पश्चिम चीन स्थित तुन-हुआंग पर 787 से 848 ई. तक तिब्बतियों का आधिपत्य था। अनुमान है कि उसी अवधि में इन गैर-बौद्ध परंपरावादी रामकथाओं का सृजन व निर्माण हुआ। तिब्बत की सबसे प्रामाणिक रामकथा किंरस-पुंस-पा की 'काव्यदर्श' (तिब्बती) है। किंरस-पुंस-पा की रामायण, रामकथा का आरंभ शिव को प्रसन्न करने के लिए रावण द्वारा दसों सिर अर्पित करने के बाद उसकी दश गर्दनें शेष रह जाती हैं। इसी कारण उसे दशग्रीव कहा जाता है से होता है। यहाँ पर सीता रावण की पुत्री कही जाती है जिसका विवाह राम से होता है और अंत सीता सहित राम पुष्पक विमान से अयोध्या लौट गए जहाँ भरत ने उनका भव्य स्वागत किया।

'चीन' में रामकथा- चीनी साहित्य में रामकथा पर आधारित कोई मौलिक रचना नहीं है। बौद्ध धर्म ग्रंथ त्रिपिटक के चीनी संस्करण में रामायण से संबद्ध दो

रचनाएँ मिलती हैं। 'अनामकं जातकम' और 'दशरथ कथानम'। 'अनामकं जातकम' का कांग-सेंग-हुई द्वारा चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था जिसका मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। चीनी अनुवाद लिएऊ-तुत्सी-किंग नामक पुस्तक में सुरक्षित है। 'अनामकं जातकम' में किसी पात्र का नामोल्लेख नहीं हुआ है, किंतु कथा के रचनात्मक स्वरूप से ज्ञात होता है कि यह रामायण पर आधारित है, क्योंकि इसमें राम वनगमन, सीताहरण, सुग्रीव मैत्री, सेतुबंध, लंका विजय आदि प्रमुख घटनाओं का स्पष्ट संकेत मिलता है। नायिका विहीन 'अनामकं जातकम', जानकीहरण, वालि वध, लंका दहन, सेतुबंध, रावण वध आदि प्रमुख घटनाओं के अभाव के बावजूद वाल्मीकि रामायण के निकट जान पड़ता है। अहिंसा की प्रमुखता के कारण चीनी रामकथाओं पर बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। 'दशरथ कथानम' के अनुसार राजा दशरथ जंबू द्वीप के सम्राट बनने से कथा आरंभ होती है और कथा का अंत दशरथ के पुत्र लोमो के राजा बनने से होता है और लोमो के राजा बनते ही देश धन-धान्य से परिपूर्ण हो गया। कोई किसी रोग से पीड़ित नहीं रहा। जंबू द्वीप के लोगों की सुख-समृद्धि पहले से दस गुनी हो गई।

'खोतानी' रामायण- एशिया के पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित तुर्किस्तान के पूर्वी भाग को खोतान कहा जाता है जिसकी भाषा खोतानी है। एच.डब्लू. बेली ने पेरिस पांडुलिपि संग्रहालय से खोतानी रामायण को खोजकर प्रकाश में लाया। उनकी गणना के अनुसार इसकी तिथि नौवीं शताब्दी है। खोतानी रामायण अनेक स्थलों पर तिब्बती रामायण के समान है, किंतु इसमें अनेक ऐसे वृत्तांत हैं जो तिब्बती रामायण में नहीं हैं। खोतानी रामायण की शुरुआत राजा दशरथ के प्रतापी पुत्र सहस्रबाहु वन में शिकार खेलने गए जहाँ से हुई और अंत लोकापवाद के कारण सीता धरती में प्रवेश कर गई। अंत में शाक्य मुनि कहते हैं कि इस कथा का नायक राम स्वयं वे ही थे।

'मंगोलिया' में रामकथा- चीन के उत्तर-पश्चिम में स्थित मंगोलिया के लोगों को रामकथा की विस्तृत जानकारी है। वहाँ के लामाओं के निवास स्थल से वानर-पूजा की अनेक पुस्तकें और प्रतिमाएँ मिली हैं। वानर पूजा का संबंध राम के प्रिय पात्र हनुमान से स्थापित किया गया है। मंगोलिया में रामकथा से संबद्ध काष्ठचित्र और पांडुलिपियाँ भी उपलब्ध हुई हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि बौद्ध साहित्य के साथ संस्कृत साहित्य की भी बहुत सारी रचनाएँ वहाँ पहुँचीं। इन्हीं रचनाओं के साथ रामकथा भी वहाँ पहुँच गई। दम्दिन सुरेन ने मंगोलियाई भाषा में लिखित चार रामकथाओं की खोज की है। इनमें राजा जीवक की कथा विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसकी पांडुलिपि लेलिनगार्द में सुरक्षित है। जीवक जातक की कथा का अठारहवीं शताब्दी में तिब्बती से मंगोलियाई भाषा में अनुवाद हुआ था। इसके तिब्बती मूल ग्रंथ की कोई जानकारी नहीं है। आठ अध्यायों में विभक्त जीवक जातक पर बौद्ध प्रभाव स्पष्ट रूप

से दिखाई पड़ता है। इसमें सर्वप्रथम गुरु तथा बोधिसत्त्व मंजुश्री की प्रार्थना की गई है और अंत राम दानव राज को पराजित कर अपनी पत्नी के साथ देश लौट गए, जहाँ वे सुख से जीवन व्यतीत करने लगे।

'जापान' में रामकथा- जापान के एक लोकप्रिय कथा संग्रह 'होबुत्सुशू' में संक्षिप्त रामकथा संकलित है। इसकी रचना तैरानो यसुयोरी ने बारहवीं शताब्दी में की थी। रचनाकार ने कथा के अंत में घोषणा की है कि इस कथा का स्रोत चीनी भाषा का ग्रंथ 'छह परिमिता सूत्र' है। यह कथा वस्तुतः चीनी भाषा के 'अनामकंजातकम' पर आधारित है, किंतु इन दोनों में अनेक अंतर भी हैं परंतु पुरी कथा लोक-जीवन में रची-बसी है।

'श्रीलंका' में रामकथा- श्रीलंका में भारतीय महाकाव्यों की परंपरा पर आधारित 'जानकीहरण' के रचनाकार कुमार दास के संबंध में कहा जाता है कि वे महाकवि कालिदास के अनन्य मित्र थे। कुमार दास (512-21 ई.) लंका के राजा थे। इतिहास में इनकी पहचान कुमार धातुसेन के रूप में की है। कालिदास के 'रघुवंश' की परंपरा में विरचित 'जानकी हरण' संस्कृत का एक उत्कृष्ट महाकाव्य है। इसके अनेक श्लोक काव्य शास्त्र के परवर्ती ग्रंथों से उद्धृत किए गए हैं। इसका कथ्य वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। सिंहली साहित्य में रामकथा पर आधारित कोई स्वतंत्र रचना नहीं है। श्रीलंका के पर्वतीय क्षेत्र में कोहंवा देवता की पूजा होती है। इस अवसर पर मलेराज कथाव-पुष्पराज की कथा कहने का प्रचलन है। इस अनुष्ठान का आरंभ श्रीलंका के सिंहली सम्राट पांडुवासव देव के समय ईसा के पाँच सौ वर्ष पूर्व हुआ था। मलेराज की कथा के अनुसार राम विष्णु के अवतार हैं। इसके अतिरिक्त कंपूचिया की रामकेर्ति या रिआमकेर रामायण, लाओस फ्रलक-फ्रलाम 'रामजातक', मलेशिया की हिकायत सेरीराम, थाईलैंड की रामकियेन, नेपाल में भानुभक्त कृत रामायण, फारसी भाषा में मसीही रामायण, शेख साद -मसीह की 'दास्ताने राम व सीता' और फिलीपींस की मारनव भाषा में महालादिया लाबन आदि भी प्रचलित रामकथाएँ हैं।

वैश्विक रामकथाओं में असमानताएँ व रचनाकारों की मनोभाषिक कथा भिन्नता-

विश्व साहित्य में श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है क्योंकि रामकथा में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन हुआ नहीं मिलता। प्रवासी साहित्यकारों ने श्रीराम को संपूर्ण विश्व से साक्षात्कार करा है। संपूर्ण भारतीय समाज में भी राम का आदर्श रूप उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम के सभी भागों में स्वीकार किया गया है। भारत की हर एक भाषा की अपनी रामकथाएँ हैं। इसके उपरांत भारत के बाहर के देशों-

फिलीपाइंस, थाईलैंड, लाओस, मंगोलिया, साईबेरिया, मलेशिया, बर्मा अब म्यांमार, स्याम, इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, चीन, जापान, श्रीलंका, वियतनाम आदि में भी रामकथा प्रचलित है। बौद्ध, जैन और इस्लामी रामायण भी हैं। मैक्समूलर, जोंस, कीथ, ग्रीफिथ, बारान्निकोव जैसे विद्वान राम के त्यागमय, सत्यनिष्ठ जीवन से आकर्षित थे। किसी भी काल्पनिक पात्र का अन्य देशों, अन्य धर्मों में हजारों वर्षों से ऐसे प्रभाव का टिका रहना संभव नहीं। यह प्रवासी साहित्यकारों की ही देन है। भारतीय मानस को तो राम कभी काल्पनिक लगे ही नहीं। वे घर -घर में इष्ट की तरह पूजे जाते हैं. राम ने अपने युग में एकता का महान कार्य किया था। आर्य, निषाद, भील, वानर, राक्षस आदि भिन्न संस्कृतियों के बीच सुमेल साधने का काम राम ने किया। रावण की मृत्यु के बाद राम के मन में रावण के प्रति कोई द्वेष नहीं। श्रीरामचरितमानस के कुछ अन्य देशों में प्रसारित ऐसे संस्करण हैं, जो श्रीराम की कथा से अंतर बनाए हुए हैं, जिनमें से कुछ निम्नप्रकार से हैं-

'सेरीराम' रामायण सहित कुछ रामायणों में एक प्रसंग मिलता है कि रावण ने विभीषण को समुद्र में फिंकवा दिया था। वह एक मगर की पीठ पर चढ़ गया, बाद में हनुमान ने उसे बचाया और राम से मिलवाया। विभीषण के साथ रावण का एक भाई इंद्रजीत भी था और एक बेटा चैत्रकुमार भी राम की शरण में आ गया था। राम ने विभीषण को युद्ध के पहले ही लंका का अगला राजा घोषित कर दिया था। रंगनाथ रामायण में उल्लेख मिलता है कि विभीषण के राज्याभिषेक के लिए हनुमान ने एक बालूरेत की लंका बनाई थी। जिसे हनुमत्लंका (सिकतोद्भव लंका) के नाम से जाना गया।

'काकविन' रामायणः-इंडोनेशिया देश में रामायण का एक ऐसा संस्करण प्रचलित है जो शायद हमारे ऋषि वाल्मीकि जितना ही सुंदर और मधुर है जिसे 'काकविन रामायण' कहा जाता है। 'काकविन रामायण' का अर्थ है- वह रामायण जो इंडोनेशिया, बाली और सुमात्रा देशों की प्राचीन भाषा जावनी और संस्कृत भाषा के मिश्रण के माध्यम से काव्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह रामायण ऋषि वाल्मीकि जी की रामायण से नहीं बल्कि सातवीं शताब्दी में लिखी गई ओवी भट्टी की कविता भट्टीकाव्य से प्रेरित है, जिसमे रावण के वध का वर्णन किया गया है। इस रामायण का पहला भाग तो सामान्य रामायण के अनुरूप है, लेकिन इसके दूसरे भाग को बहुत से भारतीय विद्वानों द्वारा समझा नहीं जा सका है। इंडोनेशिया में रामायण को पुस्तक द्वारा कम पढ़ा जाता है, इसके अतिरिक्त रामायण को थियेटर में नाटक, कविताएं, भजन एवं गाने, विभिन्न प्रकार के नाच और कठपुतली के द्वारा जन-जन तक पहुंचाया एवं दिखाया जाता है। वायंग कठपुतली शो

इंडोनेशिया का सबसे पुराना कठपुतली खेल शो है जिसमें रामायण की कहानियां होती है।

कावी भाषा में कई महाकाव्यों का सृजन हुआ है-'उत्तरकांड' गद्य, चरित रामायण अथवा कवि जानकी, बाली द्वीप व परवर्ती रचनाओं में 'सेरतकांड', 'रामकेलिंग' और 'सेरी राम' का नाम उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त ग्यारहवीं शताब्दी की रचना-'सुमनसांतक' में इंदुमती का जन्म, अज का विवाह और दशरथ की जन्मकथा का वर्णन हुआ है। चौदहवीं शताब्दी की रचना अर्जुन विजय की कथावस्तु का आधार अर्जुन सहस्रबाहु द्वारा रावण की पराजय है। महाकवि रामकथा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं-राम चरित्र जीवन की संपूर्णता का प्रतीक है। राम के महान आदर्श का अनुकरण जनजीवन में हो, इसी उद्देश्य से इस महाकाव्य की रचना की गई है। यह कथा संसार की महानतम पवित्र कथाओं में एक है। रचना के अंत में महाकवि योगीश्वर उत्तम विचारवाले सभी विद्वानों से क्षमा याचना करते हैं। इंडोनेशिया की लोक परंपरा और यहां की संस्कृति में रामायण की गहरी छाप है। यहां जावा की प्राचीनतम कृति में रामायण को 'काकविन रामायण' कहा जाता है, जिसमें पारंपरिक संस्कृत को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया है।

'रामकियेन' रामायणः-थाईलैंड की संस्कृति के तार भी रामायण से जुड़े हुए दिखायी देते हैं। यहाँ के तो राजा भी 'राम' हैं। थाईलैंड के राजा को राम ही कहा जाता है। उनके नाम के साथ अनिवार्य रूप से राम लिखा जाता है। वर्तमान में थाईलैंड के राजा 'राम दशम' हैं। यहाँ के ऐतिहासिक शहर अयुत्थया को राम की राजधानी अयोध्या के तौर पर देखा जाता है। राज परिवार आज भी अयोध्या 'अयुत्थया' में ही रहता है। वैसे तो थाईलैंड बौद्ध देश है। परंतु यहाँ के नागरिक जीवन में राम के प्रति गहरी आस्था है। वहीं, दक्षिणी थाईलैंड और मलयेशिया में राम के प्रति आस्था रखने वाले मानते हैं कि रामायण में वर्णित पात्र मूलत: दक्षिण-पूर्व एशिया के निवासी थे और रामायण की सारी घटनाएँ इसी क्षेत्र में घटी थी। वे लोग मलाया के उत्तर-पश्चिम स्थित एक छोटे द्वीप को रावण की लंका मानते हैं। थाईलैंड के राजाओं ने रामकथा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। जब तासकिन, थोनबुरी के सम्राट बने तब उन्होंने थाई भाषा में रामायण को छंदोबद्ध किया, जिसके चार खंडों में 2012 पद हैं। उनके बाद, सम्राट राम प्रथम ने अनेक कवियों के सहयोग से रामायण की रचना करवाई, जिसमें 50188 पद हैं। यह थाई भाषा की पूर्ण रामायण है। परंतु इतनी विशाल रामायण का मंचन नहीं किया जा सकता था, इसलिए राम द्वितीय ने एक संक्षिप्त रामायण की रचना की, जिसमें 14300 पद हैं। इसी प्रकार, राम चतुर्थ ने भी स्वयं पद्य में रामायण की रचना की, जिसमें 1664 पद हैं। एक और तथ्य उल्लेखनीय है कि थाईलैंड के राजभवन परिसर स्थित वाटफ्रकायों -

सरकत बुद्ध मंदिर की भित्तियों पर संपूर्ण थाई रामायण 'रामकियेन' को चित्रित किया गया है।

'लाओस' में रामकथाः-लाओस राज्य की स्थापना चैदहवीं शताब्दी के मध्य हुई है। लाओस की संस्कति चाहे जितनी पुरानी हो, राजनीतिक मानचित्र पर वह मध्यकाल में ही अस्तित्व में आया। लाओस के निवासी और इनकी भाषा को 'लाओ' कहा जाता है जिसका अर्थ है 'विशाल' अथवा 'भव्य'। लाओ जाति के लोग स्वयं को भारतवंशी मानते हैं। लाओ साहित्य के अनुसार अशोक द्वारा कलिंग पर आक्रमण करने पर दक्षिण भारत के बहुत सारे लोग असम-मणिपुर मार्ग से हिंद चीन चले गए। लाओस के निवासी अपने को उन्हीं लोगों के वंशज मानते हैं। रमेश चंद्र मजूमदार के अनुसार थाईलैंड और लाओस में भारतीय संस्कृति का प्रवेश ईसा-पूर्व दूसरी शताब्दी में हुआ था। उस समय चीन के दक्षिण भाग की उस घाटी का नाम 'गांधार' था। लाओस में रामकथा पर आधारित कई रचनाएँ हैं जिनमें मुख्य रूप से फ्रलक-फ्रलाम -रामजातक, ख्वाय थोरफी, पोम्मचक -ब्रह्म चक्र और लंका नाई के नाम उल्लेखनीय हैं। 'राम जातक' के नाम से विख्यात 'फ्रलक फ्रलाम' की लोकप्रियता का रहस्य उसके नाम के अर्थ 'प्रिय लक्ष्मण प्रिय राम' में समाहित है। 'रामजातक' लाओस के आचार-विचार, रीति-रिवाज, स्वभाव, विश्वास, वनस्पति, जीव-जंतु, इतिहास और भूगोल का विश्वकोश है। राम जातक दो भागों में विभक्त है। इसके प्रथम भाग में दशरथ पुत्री चंदा और दूसरे भाग में रावण तनया सीता के अपहरण और उद्धार की कथा है। राम जातक के प्रथम खंड में लाओस के भौगोलिक स्वरूप और सामाजिक परंपराओं का विस्तृत वर्णन है।

'यामा जतदाव' रामायणः-भारत के पड़ोसी देश म्यांमार (बर्मा) में भी राम नाम की महिमा व्याप्त है। यहां का पोपा पर्वत औषधियों के लिए विख्यात है। ऐसी मान्यता है कि जब लक्ष्मण को शक्ति लग गई थी तब उनके उपचार के लिए पोपा पर्वत के ही एक भाग को महावीर हनुमान उखाड़कर ले गये थे। म्यांमार के नागरिक उस पर्वत के मध्यवर्ती खाली स्थान को दिखाकर पर्यटकों को यह बताते हैं कि पर्वत के इस भाग को हनुमान उखाड़कर लंका ले गये थे। भारत का पड़ोसी देश म्यांमार जिसे पहले बर्मा भी कहा जाता था, वहां 11वीं शताब्दी से ही मौखिक रूप से रामायण वाचन का चलन था। 13वीं शताब्दी के आने के बाद ही बर्मी भाषा में इसे पुस्तक का रूप दिया गया था जिसे 'यामा जतदाव' कहा गया, लेकिन 16वीं शताब्दी तक मुख्यतः इसे मौखिक रूप से ही लोगों तक पहुंचाया गया। 16वीं शताब्दी के अंत से लेकर 18वीं शताब्दी तक ही इसे पुस्तक के रूप में संग्रहित कर लेखन कार्य किया गया, जिसमे नाटकीय ढंग से छंद को बौद्ध संतो द्वारा लिखा गया था, उन्होंने बर्मा (म्यांमार) की सांस्कृतिक और साहित्यिक मूल्यों को रामायण में शामिल तो किया

लेकिन उसे पूरी तरह से नहीं बदला। हालांकि पहली लिखित बर्मी रामायण संस्करण 1775 में 'यू आंग फियोन' द्वारा लिखी गई थी, जिसका नाम था "रामा थागिन" जिसका अर्थ होता होता है प्रभु राम के गाने।

'हिकायत सेरी रामा' रामायणः-रामायण का यह संस्करण सबसे ज्यादा विवादित बताया जाता है क्योंकि बहुत से ऐसे बदलाव किए गए है जिससे हिंदू धर्म के लोगों की भावनाएं आहत होती है। मलेशिया देश की राष्ट्रीय भाषा मलय में लिखित 'हिकायत सेरी रामा', वाल्मीकि रामायण का मलेशियाई संस्करण है जो 16वीं शताब्दी में सबसे ज्यादा चर्चित हुआ था। मलय रामायण के संस्करण का अंग्रेजी अनुवाद हैरी एवलिंग ने किया था। 18वीं शताब्दी आते-आते इस रामायण का इस्लामीकरण हो गया था, क्योंकि मलेशिया में इस्लाम धर्म का दबदबा और शासन चरम पर हो चुका था, 16वीं शताब्दी में लिखी गई मलय रामायण में कई पात्रों को इस्लाम के महत्पूर्ण व्यक्तियों और पैगंबरों से बदला गया था। यह महाकाव्य मलेशिया की मलय भाषा, संस्कृति और साहित्य का अभिन्न अंग बताया जाता है। 'हिकायत सेरी रामा' का अर्थ होता है महान राम का इतिहास। 1991 में मलय भाषा में हिकायत सेरी रामा पर फिल्म भी बनाई गई थी जिसका नाम था "नान ओरु मलेशियन"। मलेशिया में भी वाल्मीकि रामायण को मलय संस्कृति और समाज के हिसाब से और इस्लामिक राजवंश के दबदबे की वजह से कई जगह, पात्र और घटनाओं को बदला गया है।

'बोलर-टोली' रामायणः- ओइरात भाषा में लिखी बोलर टोली, मंगोलिया देश की रामायण है जो जैन धर्म के पाठ पुष्पदंत की महापुराण पर आधारित है। इस रामायण का आगमन बौद्ध धर्म के मंगोलिया आने के बाद हुआ था। वैसे तो बौद्ध धर्म मंगोलिया में 11वीं से 12वीं शताब्दी के बीच में आया था लेकिन रामायण तिब्बत के बौद्ध भिक्षु द्वारा 19वीं शताब्दी में प्रचारित की गई थी। यह रामायण भी मंगोलिया के राष्ट्रीय साहित्य और संस्कृति का हिस्सा है। इस रामायण में तिब्बत की रामायण सुभाषित रत्ना निधि से भी कुछ कहानी और पत्रों को भी जोड़ा गया है। इस रामायण के अंदर जैन, बौद्ध, हिंदू और मंगोलिया की संस्कृति का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। इस रामायण की कहानी रावण, दशरथ और श्रीराम पर केंद्रित है। पात्रों के नामों में अंतर -रावण– दशाग्रीव, लंका– बोलर टोली । कथा में अंतर- लक्ष्मण और विभीषण का कोई उल्लेख नहीं।,मां सीता रावण की बेटी।, रावण के दस सर की जगह है दस मुख्य प्रमुख।, विभीषण ने नहीं हनुमान ने की रावण को मारने में राम की मदद।, प्रभु राम को बताया गया गौतम बुद्ध का भक्त।, इस रामायण में अंत की लड़ाई में सबसे बड़े बदलाव, श्री राम ने 100 दर्पण वाले कमरे में छुपे रावण को ढूंढकर मारा जिसमे भगवान हनुमान ने की उनकी मदद।

'वियतनाम' में रामायणः- वियतनाम के नागरिक भी अपने देश को राम की लीलाभूमि मानते हैं। इस मान्यता की पुष्टि सातवीं शताब्दी के एक शिलालेख से होती है, जिसमें आदिकवि वाल्मीकि के मंदिर का उल्लेख हुआ है। पहली से 16वीं सदी तक वियतनाम को नगर चंपा कहा जाता था जहां हिंदू राजवंश राज किया करता था। 7वीं से 9वीं शताब्दी तक उनकी राजधानी इंद्रपुरा वर्तमान में ट्रा कीउ थी। चंपा के मंदिर के शिलालेखों से संकेत मिलता है कि रामायण को 7वीं शताब्दी तक जाना जाता था। राम और कृष्ण उन मंदिरों में पाए जाते हैं जो मुख्य रूप से उमा महेश्वर को समर्पित हैं। कई शासकों द्वारा खमेर स्मारकों में पाए गए कई प्राचीन शिलालेख संस्कृत या पुरानी चाम भाषा में लिखे गए थे और पूरे मध्य वियतनाम में पाए गए हैं। राजा ईशानवर्मा और प्रकाशधर्मन के समय, एक शिलालेख में ऋषि वाल्मीकि को श्रद्धांजलि दी गई है और खमेर राजाओं को कुरुंग बनम (पर्वत) कहा जाता था, जिसका अर्थ है शिलाराजा, जो पवित्र पर्वत की व्याख्या करता है जो कि उन्हें प्राचीन भारत से जोड़ता था। वियतनाम में रामायण के गहरे प्रभाव का प्रमाण मिलता है। वियतनाम में रामायण के प्रसंगों पर नाट्यमंचन भी होता है। वियतनाम में रामायण से जुड़े विभिन्न प्रसंगों के गायन और नाट्यमंचन की संस्कृति है। उल्लेखनीय है कि पहली से 16वीं सदी तक वियतनाम चंपा नगर के नाम से जाना जाता था, जहां हिंदू राजवंश का शासन था। वियतनाम के त्रा-किउ नामक स्थल से प्राप्त एक शिला लेख में महर्षि वाल्मीकि का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

'रिमकर' या 'रामकरती' रामायणः-राम के असाधारण व्यक्तित्व और उनकी कीर्ति गाथा का एक स्वरूप कंबोडिया में बेहद प्रसिद्ध है। रामायण महाकाव्य पर आधारित कंबोडियाई महाकाव्य 'रिमकर' जिसे 'रामकरती' भी कहा जाता है, जो संस्कृति के रामायण महाकाव्य पर आधारित कंबोडियाई महाकाव्य कविता है। जिसका शाब्दिक अर्थ हिन्दी में 'राम की महिमा' या 'राम कीर्ति' है। यह अच्छाई और बुराई के संतुलन को दर्शाती है।

'तिब्बत और झिंजियांग' में रामायणः-तिब्बत रामायण की पांडुलिपि, दुनहुआंग की कई पांडुलिपियों से मेल खाती है। रामायण का यह संस्करण तिब्बत और झिंजियांग में चौथी से ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी के बीच लोकप्रिय था। बीसवीं शताब्दी में, दुनहुआंग (सिल्क रूट का पूर्वी छोर और चीन का झिंजियांग प्रांत) की मोगाओ गुफाओं में विभिन्न पांडुलिपियों की खोज की गई थी जिसमे छह अधूरी पांडुलिपियाँ मिलीं और इन भागों से रामायण की खोज की गई। इनमें से चार पांडुलिपियां लंदन में ब्रिटिश लाइब्रेरी में इंडिया ऑफिस रिकॉर्ड्स में संरक्षित की गई हैं और अन्य दो फ्रांस की नेशनल लाइब्रेरी में हैं।

'नेपाल' की रामकथाः-नेपाल में रामकथा का विकास मुख्य रूप से वाल्मिकि तथा अध्यात्म रामायण के आधार पर हुआ है। नेपाली काव्य और गद्य साहित्य में रामकथा पर बहुत सारी रचनाएँ हैं। नेपाल के राष्ट्रीय अभिलेखागार में वाल्मीकि रामायण की दो प्राचीन पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। इनमें से एक पांडुलिपि के किष्किंधा कांड की पुष्पिका पर तत्कालीन नेपाल नरेश गांगेय देव और लिपिकार तीरमुक्ति निवासी कायस्थ पंडित गोपति का नाम अंकित है। इसकी तिथि सं. 1076 तदनुसार 1029 ई. है। दूसरी पांडुलिपि की तिथि नेपाली संवत् 795 तदनुसार 1674-76 ई. है। नेपाली साहित्य में भानुभक्त कृत रामायण को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नेपाल के लोग इसे ही अपना आदि रामायण मानते हैं। यद्यपि भानुभक्त के पूर्व भी नेपाली रामकाव्य परंपरा में गुमनी पंत और रघुनाथ का नाम उल्लेखनीय है। रघुनाथ कृत रामायण सुंदर कांड उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लिखा गया। इसका प्रकाशन नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिंग द्वारा कविराज दीनानाथ सापकोरा की विस्तृत भूमिका के साथ 1932 में हुआ।

वैश्विक रामकथा के मनोभाषिक प्रभाव व साक्ष्य -

श्रीरामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा लिखित भारत का एक ऐसा महाकाव्य है, जिसकी घटनाएं, कहानी, पात्र आदि मनुष्यों को जीवन जीने का असल सार समझाते हैं। श्रीरामचरितमानस महाकाव्य बताता है कि कैसे बुराई चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो वह अच्छाई के सामने हार ही जाती है। श्रीरामचरितमानस के द्वारा

हमे प्रभु श्री राम के व्यक्तित्व का भी पता लगता है कि कैसे भगवान विष्णु के अवतार और अयोध्या के राजकुमार एवं राजा रहते हुए भी उन्होंने अपना जीवन सत्य और सादगी के नाम कर दिया था। श्रीरामचरितमानस महाकाव्य में उल्लेखित हर पात्र से हमे कुछ न कुछ सीखने को मिलता है, तो जब इस काव्य में बात एक धर्म की नहीं मनुष्यों की हो रही हो तो इस बड़े महाकाव्य की कहानी महज एक देश तक सीमित कैसे रह सकती है। वर्तमान में भारत से बाहर के देशों में ऐसी रामायण भी हैं, जो रचनाकारों की मनोभाषिकता से प्रभावित हैं, जिसमें लेखकों हे प्रभु राम के पिता और महाज्ञानी रावण की नगरी में भी परिवर्तन किए हैं। साथ ही कुछ ऐसे देश भी हैं जिनके इतिहास, प्रतिलिपि और पुराने पत्थरों की नक्काशी में रामकथाओं की कहानी उकेरी गई है ।

प्रचलित शिलालेख, चित्रकारी, नृत्य एवं गीत प्रस्तुतियों -

विश्व में अध्कतर ऐसे संस्करण हैं जिन्हें रामायण की तरह किताबों के रूप में लिखा गया है लेकिन ऐसे और भी देश है जहां रामायण का अस्तित्व है लेकिन शिलालेख, मंदिरों में चित्रकारी, नृत्य एवं गीत जैसे अन्य रूपों में भी देखी जाती है। इन देशों का विवरण इस प्रकार है- कंबोडिया में कंपूचिया के प्रसिद्ध मंदिरों की दीवारों पर भगवान राम की चरित्रगाथा का वर्णन करते चित्र देखे जा सकते हैं। यहाँ के विश्व विख्यात हिन्दू मंदिर 'अंकोरवाट' के गलियारे में तत्कालीन सम्राट के बल-वैमन का साथ स्वर्ग-नरक, समुद्र मंथन, देव-दानव युद्ध, महाभारत, हरिवंश तथा रामायण से संबद्ध अनेक शैलचित्र हैं। यहाँ के शिलाचित्रों में रूपायित राम कथा बहुत संक्षिप्त है। इन शिलाचित्रों की शृंखला रावण वध हेतु देवताओं द्वारा की गयी आराधना से आरंभ होती है। उसके बाद सीता स्वयंवर का दृश्य है। विराध एवं कबंध के वध का चित्रण है। स्वर्ण मृग के पीछे धनुष-बाण लेकर दौड़ते राम भी दिखाई पड़ते हैं। सुग्रीव से राम की मैत्री का दृश्य मंदिर की दीवारों पर चित्रित किया गया है। चीन में भी राम के दर्शन हो जाते हैं। यहाँ बौद्ध जातकों के माध्यम से मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की कथा पहुँची थी। वहाँ अनामक जातक और दशरथ कथानम का क्रमश: तीसरी और पाँचवीं शताब्दी में अनुवाद किया गया था। वहीं, तिब्बती रामायण की छह पांडुलिपियाँ भी तुन-हुआन नामक स्थल से प्राप्त हुई हैं। चीन के उत्तर-पश्चिम में स्थित मंगोलिया में राम कथा पर आधारित जीवक जातक नामक रचना है। इसके अतिरिक्त वहाँ तीन अन्य रचनाएँ भी हैं जिनमें रामचरित का विवरण मिलता है।

एशिया के पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित तुर्किस्तान भी राम के प्रभाव से दूर नहीं रह सका। तुर्किस्तान के पूर्वी भाग को खोतान कहा जाता है। यहाँ की स्थानीय भाषा 'खोतानी' में भी रामायण की प्रति पेरिस पांडुलिपि संग्रहालय से प्राप्त हुई है। इस पर

तिब्बती रामायण का प्रभाव दिखायी देता है। वहीं, जापान के एक लोकप्रिय कथा संग्रह होबुत्सुशु में संक्षिप्त रामकथा संकलित है। इसके अतिरिक्त वहाँ अंधमुनिपुत्रवध की कथा भी है। श्रीलंका में कुमार दास के द्वारा संस्कृत में जानकी हरण की रचना हुई थी। वहाँ सिंहली भाषा में भी एक रचना है, मलयराजकथाव। नेपाल में रामकथा पर आधारित अनेकानेक रचनाएँ जिनमें भानुभक्तकृत रामायण सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसी तरह, अयोध्या और कोरिया के रिश्ते लगभग 2000 वर्ष पुराने बताए जाते हैं। कोरिया में भी एक अयोध्या है जिसे अयुता कहा जाता है।

निष्कर्ष-विश्व के विभिन्न देशों में प्रचलित रामकथाओं का अध्ययन पता चलता है कि समय की लंबी यात्रा में राम की चरित्र गाथा भारत प्रवासी साहित्यकारों से होकर न केवल विश्व के विभिन्न हिस्सों में पहुँची अपितु संपूर्ण विश्व में साहित्यकारों, देशकाल व रचनाकारों की मनोभाषिक दृष्टि के अनुरूप ढल भी गई है। थाईलैंड, म्यांमार, कंबोडिया, लाओस, मलयेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका, नेपाल, इरान, चीन, वियतनाम, फिलिपींस, तिब्बत, जापान, मंगोलिया, तुर्किस्तान की प्राचीन भाषाओं में रामकथा पर आधारित बहुत सारी साहित्यिक कृतियां हैं। अनेक देशों में तो शिलाचित्रों पर रामकथा के अवशेष दिखायी देते हैं। कंपूचिया की रामायण ख्मेर लिपी में है। एस. कार्पेल्स द्वारा लिखित रामकेर्ति के सोलह सर्गों का प्रकाशन अलग-अलग पुस्तिकाओं में हुआ था। इसकी प्रत्येक पुस्तिका पर रामायण के किसी-न-किसी आख्यान का चित्र है। कंपूचिया की रामायण को वहाँ के लोग 'रिआमकेर' के नाम से जानते हैं, किंतु साहित्य में यह 'रामकेर्ति' के नाम से विख्यात है। 'रामकेर्ति' ख्मेर साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृति है। 'ख्मेर' कंपूचिया की भाषा का नाम है। 'रामकेर्ति' और वाल्मीकि रामायण में भी अत्यधिक समानता प्राप्त होती है। जो रामकथा की वैश्विक लोकप्रियता का बिंब है, जिसके आधार में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान छिपा है।

संदर्भ-

1. पोद्दार हनुमान प्रसाद, श्रमद्गोस्वामी तुलसीदासजीतिरचित ''श्रीरामचरितमानस'' (सचित्र, सटीक, मोटा टाइप), बालकाण्ड, प्रकाशक एवं मुद्रक गीताप्रेस, गोरखपुर-273005, सं0 2071 दो सौ पचहत्तरवाँ, पृष्ठ संख्या 143, 186, 212,218, 221, 227, 229, 231, 333, 334, 335, 336, 337, 346, 351, 367, 398, 399, 401, 402, 409, 417, 457, 461, 463, 621, 623, 651, 658
2. वही, पृष्ठ संख्या 685, 688, 689, 691, 703, 709, 710, 715, 735, 741, 756, 758, 775, 781, 791, 851, 895, 897, 933, 946, 958, 975, 996, 1016, 1021
3. 'वाल्मीकीय रामायण', प्रकाशक, देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली पृ. 74-83, 110-148, 158-163, 502-509
4. वही, पृ. 555-559, 595-556, 607-617, पृ. 631, 633, 687, 701, 778

5. राजगोपालन, न0वी0, (लेखक-कंबन) प्रथम संस्करण-2000, कंब रामायण, महाकवि कंबन-रचित मूल तमिल से अनूदित, भाग-2, प्रकाशक बिहार-राष्ट्र भाषा परिषद, पटना-(4) पृ. 308, पृ. 327, पृ. 357, पृ. 381, पृ. 385
6. ध्वन्यालोकः, 1-5 (कारिका एवं वृत्ति) तथा 4-5 (वृत्ति), ध्वन्यालोक, हिन्दी व्याख्याकार-आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण-1985 ई०, पृ.-21-35 एवं 354 तथा ध्वन्यालोकः (लोचन सहित) हिन्दी अनुवाद- जगन्नाथ पाठक, चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण-2014, पृ.-85, 87 एवं 657
7. 'रामायणमादिकाव्यम्, श्रीस्कन्दपुराणे उत्तरखण्डे रामायणमाहात्म्ये-श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण भाग-1, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण-1996 ई०, पृ. 133, पृ. 561, पृ. 41 एवं 75
8. 'मुदलियार, वीएस (1970), कम्बा रामायणम् - अंग्रेजी पद्य और गद्य में एक संक्षिप्त संस्करण। नई दिल्लीः शिक्षा और युवा सेवा मंत्रालय, भारत सरकार। 18 जून 2019 को लिया गया।
9. 'तमिल महाकाव्य रामायणम् का सातवां कांडम्, उत्तर कांडम् ओट्टाकुथर द्वारा लिखा गया था। तमिल रामायण का उत्तर कंदमः पृ.77-61, 71 तमिल वर्चुअल यूनिवर्सिटी। 26 अप्रैल 2022 को पुनः प्राप्त.
10. 'हार्ट, जॉर्ज एलय हेफेट्ज, हैंक (1999), 'युद्ध और ज्ञान के चार सौ गीतः शास्त्रीय तमिल की कविताओं का एक संकलनः पुन्नानुनु,कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस,
11. अय्यर, वी.एस. (2016), कंब रामायण: ए स्टडी, पृ.245, पृ.133, पृ.314, पृ.21, पृ.215, पृ.65, पृ.54, पृ.85, पृ.221, पृ.223, आईएसबीएन-9788183796064
12. 'अय्यर, वीवीएस (1950), कंबा रामायणम-चार हजार से अधिक मूल कविताओं के पद्य या काव्य गद्य में अनुवाद के साथ एक अध्ययन, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्लीः दिल्ली तमिल संगम, 18 जून 2019 को लिया गया।
13. 'असाधारण कवि कंबन पर ध्यान दें'', द हिंदू, 23 मई 2010। 8 फरवरी 2018 को लिया गया।
14. डॉ°आर.पी. सेतुपिल्लै, तमिल विभागाध्यक्ष, मद्रास विश्वविद्यालय का अंग्रेजी में ''तमिल लिटरेचर'' शीर्षक लेख)
15. 'सिकंदर का पाठ और अन्य कहानियाँ, सुरा पुस्तकें। (2006)। पृ. 103, आईएसबीएन 978-81-7478-807-8।
16. पीएस सुंदरम (3 मई 2002), कंब रामायण, पेंगुइन बुक्स लिमिटेड। पृ. 38, 74, 49, आईएसबीएन 978-93-5118-100-2।
17. इंटरनेट, साभार